अंतरा-शब्दशक्ति

अश्रु बिंदु

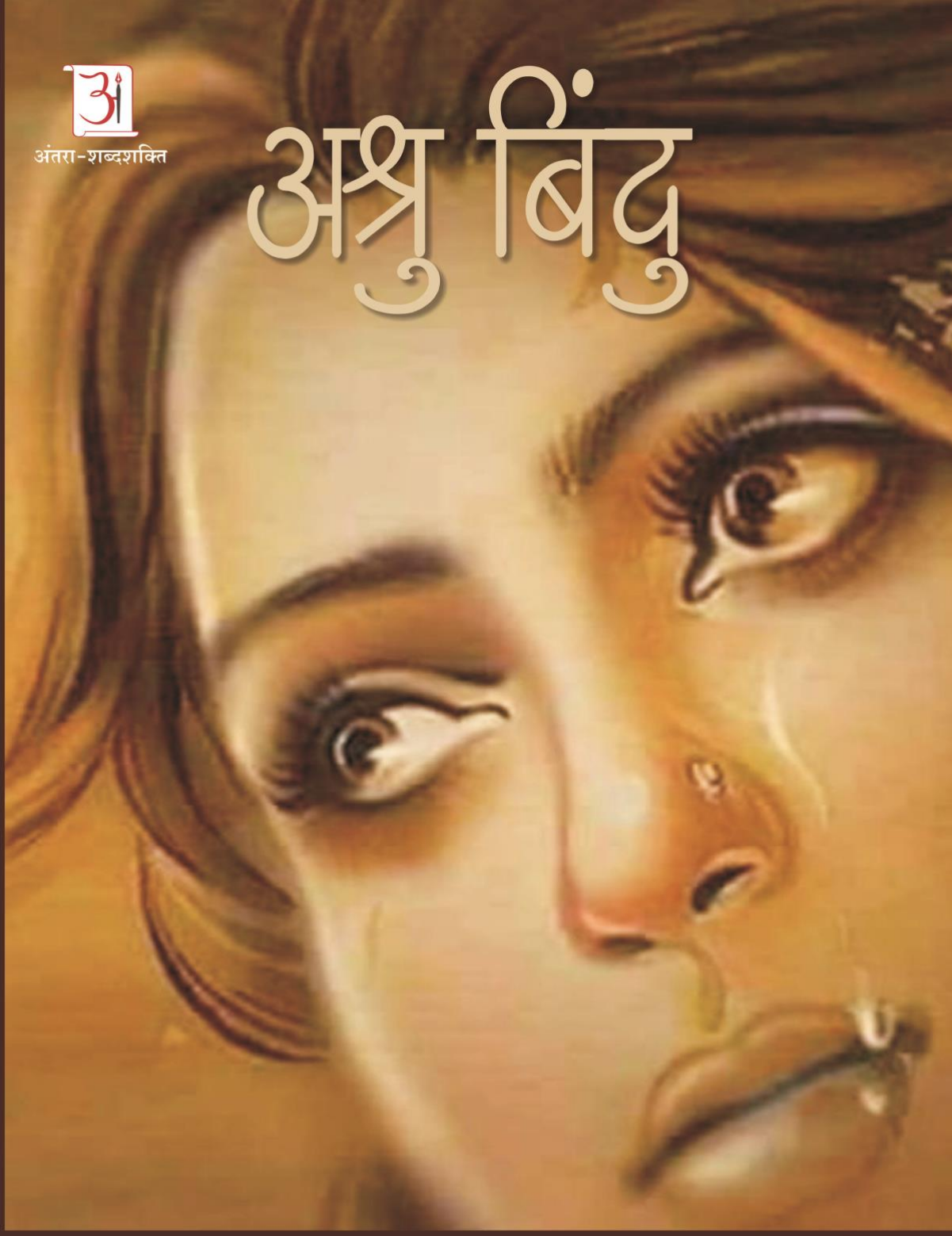

काव्य संग्रह

अर्चना कटारे

अश्रु बिंदु

(काव्य संग्रह)

अर्चना कटारे

अन्तराशब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN 9789388102926

अन्तराशब्दशक्ति प्रकाशन

मुख्य कार्यालय १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा एस२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष (कार्या.) ०७६३३२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९

अणुडाक antrashabdshkti@gmail.com

अंतरताना www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८ अर्चना कटारे

मूल्य ५५.०० रुपये

आवरण चित्र संदीप सोनी, वारासिवनी

मुद्रक शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

Ashru Bindu by Archna Katare

वैधानिक चेतावनी इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

मन की बात

पढाई का शौक मुझे बचपन से ही था। हिन्दी की कवितायेँ पढना शुरू से पसँद थीं। सुमित्रानँन्दन पन्त और निराला जी की कविताऐं मुझे बहुत पसँद थीँ। बचपन में कहानियां अपनी माँ और नानी से सुनी थी। अपने बच्चों को भी खाना खिलाते एवँ सुलाते वक्त तो जरूर ही कहानियां सुनाती थी ।

पढाई ज्यादा नही की बस इतिहास से एम.ए.किया। लिखने का शौक शुरु से बहुत ज्यादा नहीं था ।शादी के बाद आकाशवाणी में सँगोष्ठी एवं वार्ता के कुछ प्रोग्राम दिये। कभी कभी बच्चों को पढाते पढाते उन्हीं की काँपी मे पीछे दो चार लाइन लिख देती थी। उनके टीचर एक दिन बोलीं तुम्हारी मम्मी अच्छा लिखती है, उनसें बोलना लिखा करे। कभी कभी बच्चों के जन्मदिन पर दो चार लाइन की कविता लिख देती। जो पत्रिकायें घर मे आती थीं, उसी के कालम कभी कभी लिख कर सहज रूप मे ही भेज देती, डाक के द्वारा, (क्योंकि उस समय मेल और व्हाटसअप मोबाइल वगैरह नहीं थे) वो छप भी गयी। मेरा शौक बढ गया। समाचारपत्रों मे भी लेख छपने लगे। पर बच्चों के चलते मेरा लिखने का शौक कम हो गया। फिर मैने पँद्रह, बीस साल बिल्कुल ही लिखना बँद कर दिया था।

बच्चे बडे हो गये,पढने बाहर चले गये । बेटी जाँब करने लगी। एक दिन उसको जन्मदिन पर चँद लाइन कविता की लिखी, व्हाटसअप पर बहुत खुश हुई, मम्मा आप लिखा करो अच्छा लिखती हो,उसने मुझे एक डायरी और पेन लाकर दिया और मेरा उत्साह बढाया तब से मेरी सोई हुई आत्मा फिर जाग गयी। उसी ने फेसबुक चलाना खाया, मेल करना सिखाया। जिससे में अपनी कवितायें भेजने लगी और ढेरों लाईक मिलने लगी। मोबाइल पर परिवार, रिस्तेदारों, सहलियोँ को भी भेजने लगी,और सभी का प्रोत्साहन मिलने लगा।

गहोई बँधु पत्रिका में लगातार कविता आना चालू हो गया। लोक जँग मे कवितायें आने से मेरी खुशी मे पँख से लग गये।अँतरा शब्द शक्ति मुझे अँदर से शक्ति देती है। मातृभाषा डाँटकाँम में मेरा ब्लॉग बनना मेरे लिये गौरव की बात है। वूमेन आवाज से भी हमारी लेखनी को सराहना मिलती है जिसके हम आभारी हैं।

अभी मेरा प्रयास जारी है,अभी मुझे बहुत कुछ सीखना है ।अभी मै प्रगतिशील हूँ। मेरे भाई मुझे पूरा साथ देते हैं या यूँ कहैं कि वो मेरे सलाहकार हैं,बेटी मेरी हौसला।

अब मै साहित्य और कविता की ओर प्रयत्नशील हूँ और आप सभी के मार्गदर्शन की आवश्यकता है।

अर्चना कटारे
शहडोल(म.प्र)

अनुक्रमणिका

1.	पधारो गणपति	7
2.	जन्माष्टमी की तैयारी	8
3.	माखन चोरी वर्णन	9
4.	पत्र लिख रही रूक्मणी तुम्हारी	10
5.	मन के भाव	11
6.	नये नये नोट	12
7.	उत्तराखंड की यादें	13
8.	जीना-मरना	14
9.	वीर जवानों	15
10.	नदी की एक कहानी	16
11.	किटी खेल आयें	17
12.	प्यार के रिश्ते	18
13.	परिवार	19
14.	किन्नरों का दुख	20
15.	सच्चा धर्म	21
16.	हर बेटी खुश रहे	22
17.	अरज दर्द भरी	23
18.	प्रयास	24
19.	मेरा पापा जी	25

20. बचपन में खो जायें 26
21. भगवान हमारे तम्बू में 27
22. फिर से माँ बेटी बन जायें 28
23. प्रीति निभाना साथ 29
24. आओ बिटिया का ब्याह करायें 30
25. दहेज के दानव 31
26. मत रो बेटी 32

पधारो गणपति

आओ गणपति पधारो । श्रद्धा भक्ति से।।

नहीं दे सकती सोने चाँदी के आभूषण, न ही रेशमी वस्त्र ।
बस दे सकती हूँ लम्बोदर आपको प्रेम के दो पुष्प।।

नहीं दे सकती छप्पन व्यँजन, न ही सुन्दर आसन।
व्यसनों से दूर रखना, बस दे सकती हूँ मानसिक आसन।।

नहीं ला सकती, बड़ी बड़ी मूर्तियाँ न ही चाँदनी,चँदोवा ।
मै तो झुलाऊँ, अपने धूमकेतु को बाँहो का हिंडोला ।।

नहीं ला सकती मँहगे फल फूल, न ही मोदक खोवा ।
मै तो चढाऊँ अपने गजानन को, प्रेम भक्ति की दो चार दूबा ।।

नहीं जला सकती देशी घी की अखँण्ड ज्योति, न ही ढोलक घंटा की आरती।
मेरे मन में ज्योति जलाओ श्रद्धा और भक्ति की ।।

न ही संसार में कोई भूखा रहे, न हो कोई बच्चा माँ से दूर ।
हर बहन बेटी इज्ज़त पाये, ये काम करना तुम जरूर ।।

अगले बरस आने का वादा लेकर, ये काम करने आना जरूर ।
मेरा अनुरोध सुनकर, गणपति बब्बा आना तुम जरूर ।।

जन्माष्टमी की तैयारी

राधे श्याम राधे श्याम कहिये।
जनमाष्टमी आ रही, श्रँगार मेरा करिये।।

दूध लाओ दही लाओ गंगा जल डालिये।
पंचामृत से स्नान मेरा कराइये।।
चूड़ा लाओ, माला लाओ, पोशाक भी पहनाइये।
जन्माष्टमी आ रही श्रँगार मेरा करिये।।
कुण्डल लाओ, चोटी लाओ, तिलक भी लगाइये।
जन्माष्टमी आ रही श्रँगार मेरा करिये।।
पायल लाओ, मुकुट लाओ, मोर पँख भी लगाइये।
जन्माष्टमी आ रही, श्रँगार मेरा करिये।।

तुलसी लाओ, फूल लाओ, हारों से सजाइये।
केसर लाओ केवड़ा लाओ, इत्र भी लगाइये।।
लड्डू लाओ पेड़ा लाओ खीर भी लाइये।
माखन लाओ मिसरी लाओ, भोग भी बनाइये।।
बैर छोड़ें, अहंकार छोड़ें, मन मुझमें रमाइये।
जन्माष्टमी आ रही कीर्तन में जुट जाइये।।
प्रेम से परिवार सहित, तालियाँ भी बजाइये।
राधे श्याम राधे श्याम कहिये,
जन्माष्टमी आ रही तैयारी मे जुट जाइये।।

माखन चोरी वर्णन

देख यही झरोकन से मैया यशोदा, कहाँ गयो नंदलाला ।
कहाँ गयो गोपाला, कहाँ गयो मनमौजी, कहाँ गयो मतवाला ।।

भुवन में ढूँढ रही, गलियन में ढूँढ रही, कुँज गली में ढूँढ रही,बन्सी वट पै देख रही।
बृजबालन से पूछ रही, गोपियन से पूछ रही, गऊअन से पूँछ रही, ग्वालन से पूछ रही।
व्याकुल हो यमुना तक ढूँढ रही,मनसुखा से पूछ रही, सुदामा से पूछ रही, सब से पूछपूछ थक हार के बैठ रही।
खटपट सुन रसोई में दौड़ रही, सब नजारा देख, मन्द मन्द मुस्काय रही ।

वो चोरन को सरदार तो माखन चुरात दिख गयो, काँधन पै हाथ धरे, सीढ़ी बनाय रहो।
सीढ़ी बनाय के, मटकी तक हाथ पहुँचा रहो।।
मटकी में हाथ डाल माखन चुराय रहो, खुद भी खाय रहो, टोली को भी खिलाये रहो।
तमाशा देख मैया कुछ हँसत है,कुछ गुस्साए रही।

तभई मटकी धड़ाम से फूटत है, मैया को गुस्सा तो सातवें आसमान को छुअत है।
हे भगवान या लल्ला ने तो काम फिर बढ़ा दियो, जब तक मैया पकडत है, तब तक सब भगत है ।
टोली तो भाग गयी, कान्हा पकड मे आवत है।
आज तो रंगे हाथ पकड़ो गयो, लल्ला की तो आज आ गयी सामत है ।।

पत्र लिख रही रूक्मणी तुम्हारी

आ जाओ हे कृष्ण मुरारी, दुनिया हो रही दुखहारी ।

माँ बहनों के आँसू नहीं रूकते, रूक्मणी लिख रही पत्र तुम्हारी ।
नेता बन रहे धृतराष्ट्र हमारे, जनता ने ही चुप्पी साधी,
नाते रिश्तेदार ही लाज लूटते, बेटियों को तो गिद्ध से देखते।
अब तुम्हीं बतओ गिरधारी, कहाँ जाये द्रौपदी तुम्हारी..?

एक बार फिर गाँडीव उठा कर, आ जाओ हे कृष्ण मुरारी ।
कामधेनु तुम्हारी कट रही हैं!बछिया की बोटी बोटी बिक रही है।।
बेटी कोख में ही मर रही है, गुरुकुल का तो हाल बुरा है।
आरक्षणों से भरा पड़ा है, ब्राह्मण क्षत्रिय घूम रहे हैं, शूद्र कुर्सी पर बैठ रहे हैं।

जिस आश्रम में कन्या जाती, रोती बिलखती बाहर आती ।
गुरु ही शैतान हुऐ हैं, राम का नाम बदनाम किये हैं।
ये राम ही माला माल हुऐ हैं, पँचजन्य का शँख नाद कराओ ।
इन व्यभिचारियों को दंड दे जाओ, कंस,दुस्शासन की भुजा उखाड़ो ।

दुर्योधन, शकुनि का नाश कर डालो, पत्र पढ़ते ही आ जाओ मुरारी ।
देर न कर देना बृजबिहारी, दुनिया हो रही दुखहारी ।

मन के भाव

अक्षर अक्षर जोड़ के, शब्द लियो बनाय।।
तिनका तिनका जोड़ के, ज्यों खग नीड़ बनाये।।

अक्षर ज्ञान मात्रा बिना,लिख सकै न कोय।
दुखिया या संसार में,प्रेम की खेती बोय।।

प्रेम बिन जग सूना,शूल लागे संसार।
जैसे सुन्दर देह पड़ी,आत्मा बिना बेकार।।

काँकर जोड कै, मकान लियो बनाय।
जहाँ प्रेम एकता रहे नहीं, एक एक ईंट खिसकाय।।

मेवा मिष्ठान खाय कै,शरीर बलवान बनाय।
या शरीर से सेवा न भयी,सब अकारथ जाय।।

तेरा मेरा के फेर में,खूब धन कमाय।
गर गरीब हाय लगी,सब खाक हो जाये।।

चापलूस या संसार में,दिखता नही कोय।
जैसे ही मौका मिले, डँक मारे सब कोय।

दुखिया सब संसार में, नकली हसै सब कोय।
हरि से नाता जोड़ लो, सुखी रहे सब कोय।।

नये नये नोट

बीत गये पुराने नोटों के दिन,
आ गये रँग बिरगे नोटों के दिन,
सबको नये नये नोटों की चाहत,
नयी नयी दुल्हनिया जैसी चाहत,
पहले बहुत सहेज कर रखते,
सभी को दिखा दिखा कर खुश होते,
नाजुक नाजुक कमसिन से होते,
छोटे छोटे प्यारे,प्यारे,
काम पुराने भी आ जाते,
उनसे सबका रिश्ता गहरा,
बीबी बिना भी काम न चलता
नोटों बिना भी जग सूना,
दोनों लक्ष्मी साथ रहें तो,
दुनिया सतरँगी दिख जाती,
पंजी,दस्सी,चवन्नी,अठन्नी के तो दर्शन दुर्लभ,
सिक्के की कम है चाहत,
बस ये भगवानों को देते,
इनके बदले सोने के सिक्के की चाहत,
नोटों, सिक्कों से ईमान न बदले,
जरूरतें और फिजूलखर्ची को समझें,
इनके आभाव को गहराई से समझें,
माना नोटों मे बहुत कुछ है,
पर सब कुछ नहीं इन नोटों में।

उत्तराखंड की यादें

कितनी प्यारी थी उत्तराखंड
यात्रा.
नीलगिरी के हिम शिखरों पर,
गगनचुंबी पर्वतों की बर्फ.,..
धरती अँबर छूते दिखते,
चाँदी से वो मढे दिखते,
धुआँ धुआँ से बादल उड़ते,
बर्फ बारी का आनंद लेते
घुमावदार और पथरीले रास्ते,
हरयाली से भरे रहते,
सीढ़ी नुमा हरे भरे रास्ते,
गलीचे नुमा बिछे से दिखते,
कल कल करते झरने बहते
सभी यात्रियों का मन मोह लेते,
प्रकृति के मनोरम दृश्य
मन को प्रफुल्लित कर देते,
रिम झिम वर्षा की बूँदें,
ठँड को और बढ़ावा देती,
जानकी चट्टी हनुमान चट्टी की
चाय...
दिल को कुछ सकून देती,
पिट्ठू, खच्चर की कतारें,
बम बम भोले गुजाँरित होती,
प्रकृति की अनुपम देन,
किसी चित्रकारी से कम न होती,
गँगा यमुना, का उद्गम स्थल,
अलकनंदा और मँदाकनी का सँगम
कहीं भागीरथी का विहँगम
कितनी निर्मल कितनी प्रचँड,
कहीं सँगम तो कहीँ विहँगम,
इन नदियों की अपनी महानता,
सारा जग शीश नवाता,
गरम कुण्ड स्नान कर,
यात्रा की सारी थकान मिटाते,
तपत कुण्ड में आलू चावल उबलते
देख,
कितने अचँभित हो जाते,
केदारनाथ बारह ज्योतिर्लिंग
में आते,
बद्रीनाथ तीर्थ में आते,
गँगोत्री का जल चढ़ाते,
ब्रम्ह कपाली में तरपण करके
पूर्वजों से आशीर्वाद पाते,
रामेश्वरम मे गँगोत्री का जल
चढ़ाकर,
शिव शँकर के दर्शन पाते,
चारो प्रयागों के दर्शन करके
उत्तराखंड की यात्रा को जाते,
एक बार दर्शन हो जाते...
यादों और स्मृति में रह जाते...

जीना-मरना

जीना मरना तो रोज लगा है,
यह तो नियति का ताना बाना है,
कुछ लोग अमर हो जाते हैं,
जो काम अच्छे कर जाते हैं,
जो युगों युगों तक यादें बन जाते.
इतिहास अमर रच जाते हैं,
जन्म से कोई ऊँच नीच नहीं
बस कर्म महान कर जाते हैं,
एक छोटी सी बात दिल को लग जाये
इंसान महान बन जाता है
मेहनत और लगन से ही,
इतिहास नये रच डालता है
कर्म ऐसा कर जायें
दिल मे यादें बन कर जाये
सत्य अहिंसा के बल पर...
इतिहास अनोखा रच जायें,
मारा मारी छोड़ो सब
सब यही धरा रह जायेगा...
जीना है तो खुशियाँ बाँटों
जो दुआऐं दे जायेगा..
जीना है तो वतन की खतिर
मरना इसी की खातिर है...
आँख उठाकर देखे वतन को,
प्राणों से हाँथ गँवाना है,
इस माटी का तिलक लगाकर,
जय हिन्द कहकर.
हँसते हँसते सूली पर चढ़ जाना है
मेरे देश पर आँच न आये...
ऐसा वचन निभाना है।

वीर जवानों

उठो हमारे वीर जवानों,
पड़ोसियों ने ललकारा है,
एक का बदला सौ से लेना,
यही काम तुम्हारा है।
तुम हो वतन के रखवालों,
सिंहनी ने दूध पिलाया है,
भेडों की है फौज सामने,
आज शेरों को देख घबराया है।
देखोकोई मौका मत छोड़ना,
बस मौत के घाट उतारना है,
दुश्मन कैसा भी हो..
जीत को गले लगाना है।
बहुत मौका दे चुके...
अब रहम का जमाना नहीं,
अब तो सर पर चढ़ बोल रहे,
टुकड़ा भी हमको देना नहीं,
लाशों ढेर के ढेर लग जायें,
लग जाने दो कोई बात नहीं,
जीना मरना लगा रहता है...
वीर ही आते देश के काम ही।

नदी की एक कहानी

बस
सरिता बन बह रही जिन्दगी,
कभी झरने बनकर,कभी पहाड़ों से
टकराकर,
कभी धुआंधार बनकर,
कभी कभी बाढ़ और सुनामी
बनकर,
मै ही हूँ जो...!
आस पास के वातावरण को
हरा भरा करती,
अनेक कष्टों को सहकर अन्न
उपजती,
भूखों को तृप्त करती,
प्यासों को संतुष्टि देती,
सुन्दर सुन्दर फूलों की छटा बिखेर,
सभी के मन प्रफुल्लित करती,
बस यही मेरी कहानी
मैं तो..
अपना कर्तव्य पूरा करती,
कोई मेरे जल में
कपड़े, चमड़ा धोता
मुझे ही प्रदूषित करता,
मै निरन्तर, निश्छल बहती रहती,
मूक बन सब यातनाएँ सहती,
कोई!
सूर्य अर्क देते,तर्पण करते,
अस्थियाँ प्रवाहित कर जाते
सभी अपना धर्म और कर्म करते,
मै तो.
अपना प्रवाह निरन्तर करती,
दिन रात में कभी न देखती,
अनन्त काल से बह रही हूँ और
बहती रहूँगी,
मै ही...
गँगा, मँदाकनी,सरिता, सरस्वती,
सभी नारी में समाहित हूँ,
मेरी और नारी की एक कहानी,
अपनी जीवन यात्रा पूरी कर.
सागर मे समाहित हूँ,
मेरा नाम,पहचान खो गयी...
अन्त में..!
सागर से पहचानी जाती हूँ,
मैं भी एक नारी हूँ..
अपना नाम भी पति से जोड़ कर
कुल, वंश, गोत्र तक खो देती हूँ...।
पति के नाम से जानी जाती हूँ.
सरिता से...सागर मे समाहित हूँ..
नदी...नारी की एक कहानी।
अन्त एक सा पाती हूँ!

किटी खेल आयें

आओ सखी हम सब मिलकर,
किटी खेल आयें,
रँगबिरँगे कपड़े पहन कर,
तितलियों सी सज जायें,
सुख दुख सब अपने बाँटें,
खिलखिलाकर हँस जायें
सहेलियों संग मौज करके
मन हल्का कर आयें,
चाय,कॉफी बिस्किट नमकीन
समोसा,आलू ब़डा,भजिया खाकर
सर्दियों का लुफ्त उठायें,
ड्रेस थीम का विचार आते ही
कल्पनाओं में खो जायें...
नये रूप और नये लिबास में
खुद को हीरोइन से कम न पायें,
तरह तरह के पोज़ देकर...
फोटो भी खिंचा आयें,
सेल्फी लेकर अपनी
एफ.बी. की प्रोफाइल बदल आयें,
डी.पी.भी पुरानी हो गयी,
उसको भी बदल आयें,
लाइक और कमेंट्स पर
चलो थोड़ी देर खुश तो हो जायें,
हाऊज़ी के जीतने की खुशी में
चेहरे में चार चाँद लग जायें,
चंद रूपये के हार के दुख में
मुँह लटका के घर को आयें,
अपना नम्बर न निकलने पर...
मन ही मन खिसियायें,
तरह तरह के मुँह बनाकर
अपना दुख प्रकट कर जायें,
अब आती है गेम बारी...
सब अपना अपना दाँव लगायें,
नम्बर लग जाने पर विश्व विजेता
से कहलायें,
गिफ्ट पाकर...
ओलम्पिक की ट्राफी सा सुख पायें.
चलो सखी कुछ देर के लिये
मन बदल आंये,
आओ सखी चलो किटी खेल आयें।

प्यार के रिश्ते

पति पत्नी के रिश्ते जीवन भर साथ निभाते,
आनंद और खुशियाँ दे जाते, सुख दुख में साथ निभाते,
विश्वास और प्यार पर पकते,
दिनों दिन फलते फूलते,
महक और खुशबू बिखेरते,
प्रेम की बगिया में नये नये फूल खिलाते,
दोनों के बीच भ्रम हो जाये,
मनमुटाव के बीज पल जाते,
आपसी तकरार हो जाती,
नाजुक रिश्ते बिखर से जाते,
दोनों परिवार दुखी हो जाते,
दोनों आपस में सुलझा लो,
अपना घर परिवार बचा लो, गाँठ न मन में पालो,
जो कहना है वो कह डालो,
नाजुक हैं ये रिश्ते प्यारे,
सब रिश्तों से प्यारे प्यारे,
इनसे ही परिवार बने हैं,
आगे मिलकर समाज बने हैं
समाज से देश बने हैं,
रिश्तों को बहुत मजबूत बनायें,
समाज में एक प्रेम की मिसाल बन जायें,
राम सीता,शिव पार्वती सी जोड़ी बन जायें,
अपना जीवन सुख से बितायें।

परिवार

देखो ऐसा कोई काम न करना,
परिवार पर जरा सी आँच आये,
खुशी खुशी सब मिलकर रहना,
जिससे मान बड़ाई पाये,
हर बाधाओं को मिलकर सुलझाना,
गाँठ कभी न इनमें पड़ने देना
प्यार की है इसमें अहमियत,
बस प्यार से ही सींचा जाये,
सब मिलकर हाँथ बटाओ,
हर दम खुशियाँ पाते जाओ,
जहाँ सभी खुशी से रहते,
लक्ष्मी वहीं बरसती रहती,
जहाँ बुजुर्गों की आज्ञा पालन होता,
वहाँ न एक वृद्धाश्रम रहता,
इनसे होती सँस्कारों की बौछारें,
सारा परिवार सिंचित होता,
परिवार माला संग मोती हैं,
जो हर सदस्यों मे धागा संग पिरोती है।

किन्नरों का दुख

अनगिनत योनि भटक कर आया,
कितने प्यार से कोख में आया,
कितने सपने माँ ने बुने,
पापा की आस का तारा,
अनेकों सपने परिवार ने देखे,
सोचा सुख दुख मे होंगे अपने,
आनंद की वो घड़ी आयी,
घर मे बजने वाली थी शहनाई,
पटाखों की लड़ियाऔ ले रखी थीं,
मिठाइयों की थाली सजी थीं,
अब गूँजेंगी किलकारी,
सब मीठे सपने बुन रहे थे,
बुआ,दादा,दादी,चाचा,चाची
सब अपने सम्बोधन बुन रहे थे,
बच्चे के रोने की आयी आवाज,
पटाखों के शोर से गलियों में हुई
आवाज,
सभी के चेहरे पर थी मुस्कान,
तभी डॉ. ने आकर बोला.
किन्नर ने है जन्म लिया
सभी के चेहरे के रंग उड़ गये...
मानो धरती में सभी समा गये...
मुँह सभी के सूख गये...
मैंने क्या बिगाड़ा था..सभी ने सिर
पीटा था...
सब सपने तितर बितर हो गये..
उस बच्चे का क्या दोष...
जो अभी अभी जन्मा था...दुनिया
से अनजाना था..
वो मासूम फूल सा चेहरा था...
क्या सच में,क्या दुनियाभर की
ठोकर खाना था..
क्या उसके भाग्य में था..
क्या सच मे कोई अस्तित्व नहीं
था.
हमेशा उपेक्षा का शिकार होना था
क्या मानवता कुछ नहीं कहती है
अनगिनत उलझे सवालों में
मैं रात भर सो न पाया था...

सच्चा धर्म

जिन्दगी हर पल हादसों से भरी,

कब क्या हो जाये,कुछ ठिकाना नहीं,

रास्ता वही, मंजिल वही,

न जाने कब आ जाये दुख की घड़ी
सड़क हादसा हो जाने पर
खून से लथपथ पड़ा देख निकल जाते सभी
अनजान देख डरते सभी..
क्या मानवता नहीं बच रही। सही
शायद ! उस समय कोई सहायता करे..
तोकई घर बिखरने बच जाते अभी..
उनके घरों में न मातम होता...
शायद शयनाईयाँ बज रही होतीं कहीं
पत्नी का सिन्दूर सलामत होता
बच्चे अनाथ न होते कहीं
जनम भर बूढी माँ की आँखों से आँसू न बह रहे होते...
बाप के सामने चिता न निकलती कहीं
अगर! जरा सी भी इंसानियत हो तो..
देख कर रुक जाना सही...
कुछ न कर सको तो हादसे देख
मुँह न मोड़ना कभी..
बस! एक फोन घुमा कर एम्बुलेंस बस बुला देना
शायद किसी के प्राण बच जायें.
यही है सच्ची सेवा मानवता भी कहती यही

भगवान का आशीर्वाद मिलेगा,

किसी का परिवार बचेगा,

खुद को तो सँतुष्टि मिलेगी,

अनजानों को दुआ मिलेगी,...!!!

हर बेटी खुश रहे

आसमान में हल्के तारे छिटके थे,
तभी आयी एक नन्ही परी,
भोली सी सूरत थी,
गुड़िया सी मूरत थी
गुलाबी गुलाबी गालों पर,
काली काली लटा थी,
छोटी छोटी अँखियों में,
मोटा मोटा काजल,
नन्हे नन्हे हाथों में,
मोती की पहुँचिया,
तन पर छोटी सी झबुलिया,
वो गुलाबी टोपी,
पैरों में छम छम पायल बाजे,
पूरे घर में ठुमक ठुमक घूमे
सब की वो दुलारी थी
धीरे धीरे स्कूल गयी,
वहाँ भी सबकी प्यारी थी,
दादा,दादी के आँखों की तारा थी,
बुआ लोगों को जैसे...
प्राणों से प्यारी थी,
भैया लोगों की बलराम
कृष्ण संग सुभद्रा दुलारी थी,
मम्मी पापा की आँखों में
वही छोटी सी छवि बसी...
पता नहीं कब बड़ी होती गयी.
कब ये शादी योग्य हो गयी...
कोई राजकुमार एक दिन मेरी...
ह्रदय कली को ले जायेगा...

कैसे ये माँ रह पायेगी...
सोच सोच कर दिल भर जाये..
कैसे हाथ पीले कर पायेगी,
दुनिया की रीति तो निभाना
पड़ेगी

बस.
दुनिया की हर बेटी सदा खुश रहे.
दिल से यही आशीर्वाद देती।

अरज दर्द भरी

हे प्रभु इतनी सी अर्जी,
बूढी माँ न रहे अकेली
था उसकी आँखों का एक तारा,
क्यों ले लिया तुमने.
हो गयी वो बेसहारा
कितने लाड़ प्यार से बड़ा किया था
प्यार और स्नेह से सींचा था
रूखी सूखी खाकर पाला..
अभी अभी इजीनियरिंग किया था...
अभी ही वोट का अधिकारी हुआ था.
नवयुवक सा दिख रहा था
एक झटके ने कैसे ले लिया...
कुछ तो सोचा होता
कैसे जियेगी माँ बेचारी...
राखी किसको बाँधे बहना प्यारी
दुनियाभर भी नजरें देखे...
जहाँ जाये बस अकेली अकेली
पापा को तो पहले ले लिया
कोई शिकायत न करती
अब तो नौजवान भाई ले लिया
किसी का कया बिगाड़ा था...
ईश पर से विश्वास उठ न जाये...
क्यों ऐसे परीक्षा लेते.
दुनिया के धक्के खाने क्यों अकेला छोड़ देते...
कैसे रहें दोंनों बेचारी
कुछ तो सोचा होता
बस इतनी अरज हमारी.
जाकर सम्भालो कृष्ण मुरारी।
विश्वास न उठने पाये जाकर कुछ करो.हे ! मुरली धारी!!!

प्रयास

चलो,
एक और प्रयास करें,
तेरे मेरे की दीवार मिटायें,
हम का एक बीज लगायें,
अपनापन और विश्वास, दिलायें,
शिक्षा से सिंचित कर जायें,
सँस्कारों की खाद दे आयें,
बधाओं के खरपतवार हटायें,
उम्मीदों की सिंचाई कर जायें
आओ,
नये युग का निर्माण करायें,
तेरे मेरे न होकर,
हम बन जायें।
हाथ से हाथ मिलाएँ
एक लम्बी कतार बन जाये।

मेरा पापा जी

आज हमारे जीवन का,
इतना बडा सौभाग्य है,
इतने अच्छे पापाजी का...
इतना अच्छा साथ है।

कभी अपने पिता जी की,
कमी न वो होने देते हैं,
जब कभी मन उदास हुआ तो,
अपने पास वो बुलाते हैं।

सिर पर हाथ रखकर,
सब दुख दूर कर जाते हैं,
पैसा तो लोग बहुत कमाते,
प्यार कम लोग ही पाते हैं।

प्यार भी लोग पा लें
हृदय में स्थान कम बना पाते हैं,
शायद हमने अपने जीवन में,
यह स्थान बना पाया है।

दिल से बस आशीर्वाद दे दें,
और कुछ जरूरत नहीं,
बेटी को बेटी माने...
ये कोई नयी बात नहीं

बहु को बेटी से बढकर मानें,
यह हमारा सौभाग्य रहा,
आरजू,अमन में ममता बरसती,
उनके कोमल हृदय की पहचान
सदा।

बस उनकी छत्र छाया रहे,
हम सब बन परछाई रहे,
धनधान्य से परिपूर्ण हो,
यह घर उनके संचित आशीषों से।

भगवन उनको दीर्घायु देना,
स्वास्थ्य और सेहत से परिपूर्ण रहें,
तन मन से में सेवा करूँ,
कहीं स्वप्न में भी भूल न हो ।

हे मालिक मुझे माफ करन,
अगर हमसे कहीं चूक ह,
मार्ग दर्शन करते रहिये,
जहाँ कहीं जरूरत हो।

बचपन में खो जायें

चलो एक बार फिर बचपन में खो जायें,
पिकनिक नहीं तो सैर ही कर आयें,
एक कप चाय की प्याली में...
बचपन ढूँढ लायें,
कँची,पतँग,और रेत के घरौंदे में
वही मुस्कान ढूँढ लायें.
स्कट्र्स पकड़ कर छुक छुक रेल चलाये..
बिन पैसों के खुश हो जायें.
कागज की चार पर्ची में राजा चोर, मंत्री,सिपाही बन जायें
अँधेरे मे छिप कर,छिपा छिपायी खेल आयें..
बिरचुन और उबली बेरों मे शायद ही वही रस पायें.
वही स्लेट और बत्ती लेकर मासाब और बहन जी बन जायें...
गुब्बारे की घँटी सुन फिर से दौड़े दौड़े आयें
बैट बल्ला न सही सुँगरी से ही काम चलायें
छत मे गेंद जाते ही
फिर से वही दौड़ लगायें...
सात गिप्पी रख पिट्टू खेल आयें.
गिट्टियों के टुकडों से चपेटा खेल आयें.
इमली के बीजों से अट्ठू खेल आयें...
एक बार फिर से चवन्नियाँ धरती मे दबा कर
पैसों का पेड़ लगायें...
पेड़ बडे होने के इंतजार में रोज पानी दे आयें.
काश हम सब फिर वही... सकून की जिन्दगी फिर से जी पायें.
शायद वो बचपन के दिन वापस आ जायें...
बिन पैसों के ही चैन की जिन्दगी जी पायें...

भगवान हमारे तम्बू में

उठो हमारे देश वाशियो,
कैसा कलयुग आया है,
नेता बैठे एसी में,
श्री राम हमारे तम्बू में,
दुनियाभर को देने वाले,
न्याय की आस मे बैठे हैं
कोई नेता तो ऐसा आये,
एक ईंट लगा दे मंदिर में,
मंदिर मंदिर की बातें करते,
वोट माँगते जनता से,
चुनाव जीत जाते ही,
बैठ जाते दिल्ली में,
अयोध्या जिनकी जन्मभूमि है,
उनको ही बिठाते तम्बू में,
स्वर्ण सिहाँसन जिनका रहता,
अमृत बरसाते नैनों से,
उन्हीं कमल नयनों का,
अभिषेक कराते फटे तम्बू से,
जिनके वापस आने पर,
हर घर दीप प्रज्वलित होते,
खुशियाँ मनाते घर घर में,
वही हमारे श्री राम बैठे अंधेरे कमरे में...
कब तक अत्याचार करोगे..!
इन भगवानों पर,
वोट माँगने माथा रगड़ते,
चले आते इन्हीं आस्था के चौखटों पर,
जीत के बाद एहसान जताने कोई न आते,
इन मंदिरों के दरवाजों पर,
मंदिर मस्जिद की राजनीति छोड़ो,
भगवान को आज़ाद करो,
न्यायालय से बाहर निकालो,
उनको भी मुक्त करो,
वहाँ भी दिया जला दो
जो अंदर दिया जलाते हैं
उनको मत रखो अँधेरे में,
जो दुनिया को रोशन करते हैं,
जागो हमारे देशवासियों,
भगवानों पर तो रहम करो,
हिम्मत है तो फटे तम्बू को अलग कर,
सोने का छत्र चढ़ाओ मंदिर में,...!

फिर से माँ बेटी बन जायें

आओ एक बार फिर से माँ बेटी बन जाये,
करवा चौथ पर अरमान पूरे कर जायें,
सासू माँ तुमको खूब सजाऊँ
माँ बैठो तुम कुर्सी पर,
नयी नयी साड़ी पहनकर,
तुमको खूब सजाऊँ...
कँघी करके,क्लिप लगाकर,
गजरा भी लगाऊँ,
माथे पर बड़ी सी बिन्दी लगाकर,
माँग सिन्दूर से सजाऊँ,
सूनी सूनी अखियों मे कजरा लगाके,
लाली भी लगाऊँ,
भर भर हाथ चूड़ी पहनकर,
पापा नाम पूछकर तुमको मैं चिढाऊँ,
दोनो हाथ मेंहदी सजाकर पापा पास ले जाऊँ,
नयी नयी,पायल बिछिया पहनाकर,
छन छन,छन छन कर
शरमाती शरमाती जायें,
लाल महावर भरे पैर छाप कर,
हृदय मे रख जाऊँ,
एक बार फिर सीने से लगकर कर,
सासू माँ..
माँ बेटी बन जाऊँ।

प्रीति निभाना साथ

सहज सरल जीवन अपना निकला,
हे प्रिये तुम्हारे साथ,
कभी न टोका कभी न रोका
हँस कर गुजारा साथ,
हम तुम,तुम हम ऐसे रहते,
जैसे...दूध पानी का साथ,
अपनी प्रीति में न आयी कमी,
जैसे भी रहे हों हालात,
मुस्कान में भी कमी न आयी,
क्योंकि तुम थे मेरे साथ,
सोलह श्रँगार करती फिर भी मुस्कुराते रहते,
तिरछी तिरछी कनखियों से रूप मेरा निहारते,
ग्रहणी बन काम करूँ तो हाथ मेरा बँटाते,
छेड़ खानी करते करते समय मेरा बिताते,
हम तुम दोनों खुश रहें,
रहे दोनों के हाथों मे हाथ,
हे करवा माँ कृपा करना,
छूटे न कभी हमारा साथ,
महकता रहे मेरा घर आँगन,
खुशियाँ न छोड़ें मेरा साथ,
परिवार मेरा सलामत रहे,
हे प्रियवर सदा रहे तुम्हारा साथ!!!

आओ बिटिया का ब्याह करायें

दिन में शादी करवायें,
पैसा बिजली शोर बचायें,
आडम्बर और दिखावे,
पैसा और समय बचायें,
ज्यादा खान पान के शौक से,
सेहत और स्वास्थ बचायें,
डिस्पोजल और पॉलिथिन के जहर से,
गँदगी और प्रदूषण से बचायें।
डी जे की लाइट और शोर से,
कानों और दिल को बचायें,
सिगरेट और दारू की बोतल से,
अश्लीलता और परिवार बचायें।
बड़ी बड़ी होटलों के बिल न भरकर,
मँदिर बगीचे काम में लायें,
भारी भरकम वस्त्र न खरीदें,
जो ट्रक की शोभा बढायें,
आओ बटिया का ब्याह करायें,
बड़ी बड़ी गिफ्टों के बदले,
दिल से आशीर्वाद दे जायें,
छोटी छोटी रस्मों, से ही,
घर आँगन में खुशियाँ लायें,
छोटी,छोटी खुशियों से ही,
मुस्कान हजारों दे कर जायें,
फिजूलखर्ची और बरबादी को,
आज से ही तोडें,
सँस्कृति, परम्परा और रस्मों को,
सादगी से ही जोडें,
गंदे,गंदे नाच गानों पर,
नोट हजारों उडायेंगे,
सही रीति रिवाजों,
पर सौ देने मे हिचकायेंगे,
यही पैसा और समय बचाकर,
देश की प्रगति करायें,
युगों युगो तक याद करायें,
आओ बिटिया का ब्याह करायें,
हम यही संकल्प दुहरायें।
सादगी से ही ब्याह करायें,
आओ बिटिया का ब्याह करायें।

दहेज के दानव

चाहे कितनी योजनाएँ हों।
या कितना ही लाभ मिले।
बदल नहीं सकता,
आज भी कोई जमाने को
बच्चा पैदा होते ही,
बेटी बेटा मे फर्क आ जाता है,
आज भी बेटी होने पर,
चेहरा उतर जाता है।
बेटा जन्म होते ही बाजे बजते हैं।
खुशियाँ मनायी जाती हैं।
दीवारों पर आज भी,
दूबा लगायी जाती है,
बेटा होने पर गये,
त्यौहार वापस आते हैं,
बेटी होने पर सब,
धरे के धरे रह जाते हैं,
बेटी को भी पढ़ा कर।
डाक्टर, इंजीनियर बनाते हैं,
शौक दोनों के पूरे करते
दोनों को सुयोग्य बनाते हैं,
बेटी जब ब्याह योग्य होती है,
और कमाई लाती है,
तो यही बेटे वाले पूछते,
कितना पैकेज लाती हो,
रंग, रूप, हेल्थ, हाइट,
सब गायों की तरह देखते हैं,
तब भी यह कमाई वाली कन्या,
गुम सुम सी रह जाती है,
जब बात आती दहेज की
तब ये बोली वाले आगे बढ़ जाते हैं,
इन बोली वालों के आगे,
सुयोग्य कन्या पीछे रह जाती है,
माँग पूरी न होने पर,
सुयोग्य कन्या को,
मार दिया जाता है,
क्यों इन दानवों को आखिर,,,
अपनी कन्या देता है,,,
रह जाने दो ऐसे लडकों को
कुवाँरे,,,
भटकने दो सारों को द्वारे द्वारे,,,,,

मत रो बेटी

उठ आ बेटी,मत रो बेटी,
अपने आँसू खुद पोंछ ले,
खंजर की जगह कलम पकड़ ले,
बदला अपना खुद तू ले ले,
पढ़ लिख तू अब जज बन जा,
अपना फैसला खुद सुना,
इन दरिन्दों को फाँसी दे कर,
अपना बदला तू पूरा ले,
पढ़ना लिखना है तुझको,
बँदूकें भी लेना है,
दोनो हाथों से निशाना लगाकर,
इनको ढेर करना है।
आँसू पोंछने कोई नहीं आयेगा,
ओढ़नी भी ले जायेंगे,
भरे बाजार तमाशा बना कर,
इज्ज़त नीलाम कर जायेंगे,
मदद के बहाने ले जाकर,
फिर नोच कर खायेंगें,
सबूत मिटाने किसी नाले में,
तुझको फेंक कर आयेंगे,
अपने आँसू खुद ही पोंछो,
अपनी लड़ाई खुद लड़ना है,
इन भूखे भेड़ियों को,
सबक तुम्हें ही सिखाना है।
काली रणचंडी बनकर
इनका गला उतारना है,
जिसने तेरीआबरू लूटी,
उनकी जिन्दगी लेना है।
मत रो बेटी,उठ जा बेटी,
बदला तुझे ही लेना है,
खँजर सीने में दबा कर
कलम हाथ मे लेना है।
मत रो बेटी,उठ जा बेटी,
अपने आँसू खुद ही पोछना है।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - अर्चना कटारे
जन्म - 20 फरवरी 1968, सिहोर, जिला- जबलपुर (म.प्र.)
माता - श्रीमती श्यामा देवी गुप्ता
पिता - श्री वीरेन्द्र नाथ गुप्ता
पति - श्री नीरज कटारे
शिक्षा - एम.ए. (इतिहास)
पता - नीरज कटारे, जैन मंदिर के पीछे, शहडोल (म.प्र.)
मो. - 7999845204
ई मेल - achanakatare10@gmail.com
कार्यक्षेत्र - समाज की उन्नति के लिए कविताओं के माध्यम से लोगों के मन में चेतना जागृत करना।
विद्या - काव्य लेखन, भजन, कविताऐं, गद्य, संस्मरण, लघुकथा, कहानी, यात्रा वृत्तांत
प्रकाशन - वनिता, सरिता, गृहलक्ष्मी, गहोई बन्धु पत्रिका, प्रयास पत्रिका में तथा दैनिक भास्कर समय, पत्रिका, लोकजंग, अंतरा शब्द शक्ति, मातृभाषा.कॉम एवं अन्य समाचार पत्रों व इपत्रिकाओं के माध्यम से कविताऐं, लेख, लघुकथा प्रकाशित।

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-88102-92-6
मूल्य- 55/-